OUR PUBLICATIONS

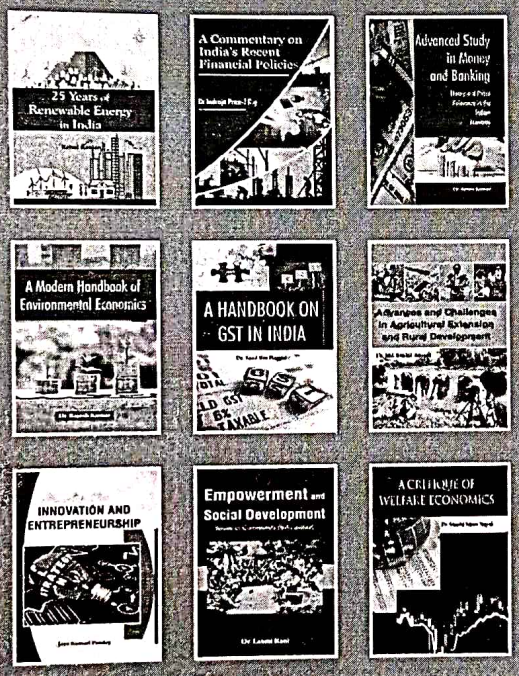


Tobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916



ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021


# दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

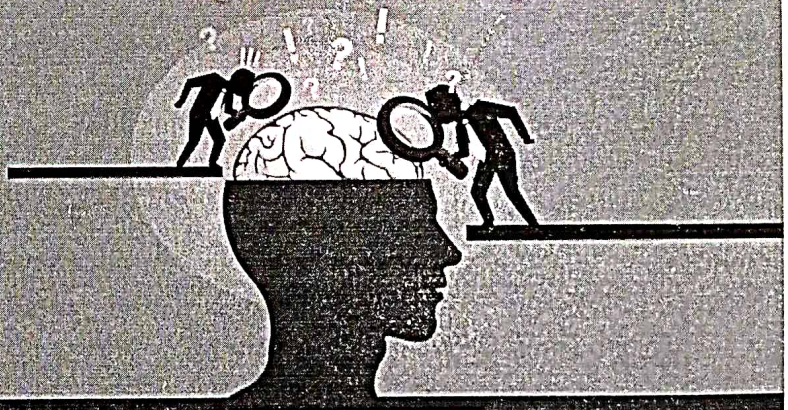


IMPACT FACTOR : 5.051

# दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

**डॉ. अश्विनी महाजन**

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

**डॉ. प्रसून दत्त सिंह**

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

**डॉ. फूल चन्द**

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

**दृष्टिकोण प्रकाशन**

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

# दृष्टिकोण


## संपादक मंडल

**डॉ. अरुण अग्रवाल**
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
**डॉ. दया शंकर तिवारी**
दिल्ली विश्वविद्यालय
**डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी**
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
**डॉ. प्रकाश सिन्हा**
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
**डॉ. दीपक त्यागी**
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ. अरुण कुमार**
रांची विश्वविद्यालय, रांची
**डॉ. महेश कुमार सिंह**
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
**डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि**
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
**डॉ. पूनम सिंह**
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
**डॉ. एस. के. सिंह**
पटना विश्वविद्यालय, पटना
**डॉ. अनिल कुमार सिंह**
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
**डॉ. मिथिलेश्वर**
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
**डॉ. अमर कान्त सिंह**
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
**डॉ. ऋतेश भारद्वाज**
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
**डॉ. स्वदेश सिंह**
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
**डॉ. विजय प्रताप सिंह**
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर



**संपादकीय सम्पर्क:**
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

**ISSN 0975-119X**

**नोट:** पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

# सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधिकांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुनः पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंक्ड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

## दृष्टिकोण

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

**संपादक**

# शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**रफत फातिमा**

*शोध छात्रा (शिक्षा संकाय), ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ*

**डॉ० नलिनी मिश्रा**

*सहायक आचार्या (शिक्षा संकाय), ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ*

## सारांश

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया है। समकालीन भारतीय समाज में मूल्य संकट हमारे जीवन के सभी पक्षों पर अपना बुरा प्रभाव डाल रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में आधे से अधिक प्रगति के बाद भी हमारा समाज विभिन्न प्रकार की समस्याओं को देख रहा है; उनमें से एक मूल्यों में क्षरण भी सम्मिलित है। इस प्रकार की समस्या हमारे विकास के साथ-साथ हमारी वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था पर भी प्रश्न चिह्न लगाती है कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं- भौतिक, आध्यात्मिक या फिर दोनों। यह स्थिति दर्शाती है कि आध्यात्मिक विकास भौतिक पहलू से पीछे है। मूल रुप से चिंता यह है कि हम इस समस्या को कैसे दूर कर सकते हैं? इसमें कोई सन्देह नहीं कि समाज और स्कूल दोनों का कर्तव्य समान रूप से महत्वपूर्ण है लेकिन मूल्यों के विकास में प्रमुख उत्तरदायित्व्व शिक्षकों की है। यह वह शिक्षक है जिसका व्यक्तित्व पूरे विद्यालय को प्रभावित करता है। छात्र अपने द्वारा पढ़ें गए ग्रन्थों की तुलना में शिक्षकों से अधिक मूल्य सीखते हैं। इस सम्बन्ध में शिक्षक शिक्षा के इस मांग को पूरा करने के लिए पुनर्भिविन्यास की आवश्यकता है। यह शोध पत्र शिक्षक और मूल्यों के उन्मुख शिक्षा के समर्थन में औचित्य प्रदान करता है और इस अभिविन्यास में विभिन्न व्यावहारिक मुद्दों पर भी विचार करता है और उपचारात्मक उपायों का सुझाव देता है।

**मूल शब्द**- शिक्षक, मूल्य शिक्षा, विश्लेषणात्मक अध्ययन।

## प्रस्तावना

शिक्षा आवश्यक रूप से शिक्षार्थी को जीवन जीने के लिए मूल्यों को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। यह जीवन का एक प्रकार है जो व्यक्ति को समाज के पोषित मूल्यों और आदर्शों के अनुसार संतुष्ट करता है परन्तु आज शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है (एनसीईआरटी, 2003)। छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों का भी नजरिया बदल गया है और इससे शिक्षकों और उन सभी के लिए सम्मान में गिरावट आई है जो शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा और अंग हैं। बढ़ते हुए शिक्षण के नैतिक पहलुओं के लिए शिक्षक शिक्षा की चिंता राजनीतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक रूप से भी किया जाना चाहिए। औद्योगीकरण ने उच्च जीवन शैली का उदय किया है और लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाया है। इसने मनुष्य को भौतिकवादी अर्थों में समृद्ध बनाया है लेकिन समाज में नैतिक प्रकृति को खराब किया है। आज लोग केवल धन, शक्ति और संपत्ति के लिए इच्छुक हैं (अनेजा, 2014)। व्यक्ति अपने स्वार्थ की प्राप्ति में अन्य लोगों के हित को खतरे में डालने के लिए तैयार हैं। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त फैल गया है। हम समाज में कई सामाजिक बुराइयों का सामना करते हैं। संचार मीडिया के संपर्क में आने के कारण बच्चे एवं किशोर अपराधी बन रहे हैं (राधा, 2016)।

शिक्षा व्यक्ति के भौतिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक के सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया है। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह न केवल ज्ञान के अधिग्रहण के लिए सूत्रधार के रूप में कार्य करे, बल्कि मूल्यों के उत्प्रेरक और आन्तरिक सत्ता के परिवर्तक के रूप में भी काम करे। प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्य आधारित थी (कौर और नागपाल, 2013)। हमें मानव निर्माण, चरित्र निर्माण, विचारों को आत्मसात करने वाला होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि हमारे देश की आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था हमारे हाथों में होनी चाहिए और यह राष्ट्रीय पद्धतियों पर भी होनी चाहिए जहाँ तक यह व्यावहारिक है। शिक्षा इस अर्थ में सभी धर्मों से परे थी क्योंकि इसका उद्देश्य परम वास्तविकता, सर्वांगीण विकास और व्यक्ति की आध्यात्मिक भलाई को साकार करना था। शिक्षक और शिक्षित के बीच का संबंध आध्यात्मिक और दिव्य था (सीबीएसई, 2003)। इस तरह के घनिष्ठता के साथ व्यक्तियों ने ज्ञान, दक्षता प्राप्त की और जीवन को अर्थपूर्ण बनाया।

मूल्य जीवन में महत्वपूर्ण माने जाने वाले मानक एवं सिद्धांत हैं। यह मूल्य्य मानव अस्तित्व के नींव हैं जो आन्तरिक भाव से प्रकट होते हैं (प्रेम, दया, करुणा, दया, सहानुभूति, समय की पाबंदी, अनुशासन, आज्ञाकारिता, व्यवहार, चरित्र आदि (राधा, 2016)। मूल्यों के ज्ञान के बिना समाज टिक नहीं सकता। मूल्य के द्वारा ही अच्छे और बुरे के बीच अन्तर करने में व्यक्ति सफल हो सकता है, उसे क्या करना चाहिए और किस से बचना चाहिए। मूल्य्य हमारे जीवन में गुणवत्ता और अर्थ लाते हैं। मूल्य एक व्यक्ति को उसकी पहचान और चरित्र को विकसित करने में मदद करता है।

## अध्ययन का उद्देश्य

- मूल्य शिक्षा के महत्व का पता लगाने के लिए,
- मूल्य शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना,
- मूल्यों को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका को समझाने के लिए।

## अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन के लिए गुणात्मक विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया।

## डेटा संग्रह और विश्लेषण

द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से डेटा को एकत्रित किया गया है। जैसे- पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और वेबसाइटों।

## परिणाम और व्याख्या

### *1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली: मूल्य शिक्षा की कमी*

हाल ही के दिनों में शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने और डिग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से संज्ञानात्मक अधिगम के क्षेत्रों में सूचनाओं की मांग बन गई। इसके परिणामस्वरूप एकपक्षीय व्यक्तित्व का उदय होता है। मनुष्य इतना संकीर्ण, भौतिकवादी, हतप्रभ, निराश और भ्रमित हो गया है कि उसे दूसरे के साथ रहने की कला नहीं आती है। हर जगह शून्यता, नीरसता और निरर्थकता का अहसास होता है। इसलिए कवि टी.एस.एलियट ने इस दुनिया को एक 'वेस्ट लैंड' कहा है, जहाँ मनुष्य आध्यात्मिक रूप से अतुलनीय भौतिक प्रगति और चमत्कारी वैज्ञानिक उपलब्धियों के बीच मृत है। नैतिक और आध्यात्मिक नींव, जिस पर हम अपनी शिक्षा प्रणाली की संरचना करते हैं, वह बच्चे के व्यक्तित्व और हमारे देश के भविष्य की नियति को ढाल सकती है। राष्ट्र को तभी सम्पन्न किया जा सकता है जब हम बच्चों में मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की गहरी भावना पैदा करें जिससे लोग अपने कार्यों में व्यवस्था, सुरक्षा और सुनिश्चित प्रगति का अनुभव करेंगें (लोवेट एंड स्कोफील्ड, 1998)।

घोटाले, गिरफ्तारियाँ, भ्रष्टाचार, बलात्कार के मामले, युवा अशांति हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। एक बहुत ही दयनीय और शर्मनाक स्थिति आजादी के बाद लंबे समय से है। युवा पीढ़ी कहाँ जा रही है? क्यों पूरी मानवता को झकझोंर कर चारों तरफ इतना अराजकता है? दुनिया का हर रंग अंधकार को क्यों दर्शाता है? इसका उत्तर दो शब्दों में है-'मूल्य संकट'। 'मूल्य' के संदर्भ के आधार पर अलग-अलग अर्थ हैं, जिसमें इसका उपयोग किया जाता है। आज हम मूल्य शिक्षा, मूल्य आधारित राजनीति और मूल्य आधारित समाज की बात कर रहे हैं। हम सभी को लगता है कि मूल्य गिर रहे हैं और कोई भी उनका सम्मान नहीं कर रहा है। दूसरों पर उँगली उठाने के उत्साह में हमें महसूस नहीं होता कि हमने भी इस गिरावट में योगदान दिया है। जबकि तकनीकी विकास शैक्षणिक प्रथाओं और सीखने के वातावरण के विकास के बारे में सभी प्रकार के प्रश्नों को उछालने के लिए अभ्यस्त हैं, शिक्षा में मूल्यों की भूमिका पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यह विचित्र लगता है कि मूल्यों का एक बुनियादी ढाँचा विकसित करना हमेशा छात्रों की शिक्षा की आधारशिला रहा है। मूल्यों को विशिष्ट मान्यताओं के रूप में माना जाता है जो विशिष्ट स्थितियों, वस्तुओं और मुद्दों को समाधन करते हैं और वे आचरण के मानकों के रूप में कार्य करते हैं।

### *2. मूल्य शिक्षा: समय की आवश्यकता*

मूल्य सबसे बहुमूल्य उपहारों में से एक है जिसे एक व्यक्ति अनुभव करके सीख सकता है। कई अनुभवों से व्यवहार के लिए कुछ साधारण मार्गदर्शक आते हैं। ये मार्गदर्शक जीवन को दिशा देते हैं और इन्हें मूल्य कहा जा सकता है। हमारे मूल्य बताते हैं कि हम अपने जीवन और ऊर्जा के साथ क्या करते हैं? मूल्य व्यक्ति के स्वयं के व्यवहार से उत्पन्न होता है और व्यक्ति की अपने विचारों के सहयोग से बहुत कुछ करता है (एस्पिन और चौपमैन, 2007)। मूल्यों का होना किसी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है। अपने स्वयं के मूल्यों को विकसित करना एक व्यक्तिगत और एक आजीवन प्रक्रिया है जिसे कक्षा में समर्थित होना चाहिए। विद्यालय को व्यक्तिगत मूल्यों के विकास को पाठ्यक्रम के रुप में गंभीरता से लेना चाहिए क्योंकि आपके पास एक के बिना दूसरे नहीं हो सकते है। एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को 'मूल्यों-स्पष्टीकरण-प्रक्रिया' के महत्व से अवगत करा सकता है। उदाहरण के लिए वह उन्हें किसी ऐसी चीज के बारे में सीखा सकता है जो आने वाले लंबे समय के लिए उनके लिए बहुत उपयोगी होगी (डैस्ट, 2003)। हालाँकि शिक्षक को कभी भी विद्यार्थियों के उन मूल्यों की संकल्पना को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए और न ही उन पर अनुचित रूप से अपने स्वयं के मूल्यों को थोपना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने जीवन का नेतृत्व करने और अपने जीवन-कौशल मूल्यों को विकसित करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। मूल्यों के सबसे निकट के सिद्धांतों को 'मूल्यों के संकेतक' के रूप में जाना जाता है और वे मूल्यों के एक संग्रह को विकसित करने की प्रक्रिया से सीध जुड़े होते हैं, अर्थात् लक्ष्य एवं उद्देश्य, इच्छाएँ, भावनाएँ, रुचि, विचार और विश्वास, दृष्टिकोण इत्यादि। अत: एक शिक्षक का कर्तव्य है कि इन 'मूल्य संकेतकों' को युवाओं में विकसित करने की मदद करें। यह मूल्य निम्नानुसार व्यक्त किये गए हैं (कालिका, 2015)

- मानव को सही मार्ग पर चलाने के लिए, यूनिवर्सल ब्रदरहुड की अवधारणा को विकसित करने और सत्य, अच्छाई और सौंदर्य के पूर्ण मूल्यों को प्राप्त करने के लिए।
- जीवन को दिशा और दृढ़ता देना और अपनी संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने और नैतिकता और चरित्र को विकसित करने के लिए जीवन की खुशी, संतुष्टि और शांति लाना;

- सकारात्मकता की ओर व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए;
- व्यक्तियों और समाज में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए;
- समाज में जीवन की गुणवत्ता और सतत् विकास लाना।

शिक्षा को सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए, और हमे लोगों की एकता और एकीकरण की दिशा में उन्मुख होना चाहिए। इसलिए शिक्षा में मूल्यों के समावेश के लिए ठोस उपकरणों की खोज और पहचान करना बहुत आवश्यक है। शैक्षिक संस्थान निम्नलिखित तरीकों और साधनों के माध्यम से मूल्य शिक्षा को बढ़ा सकते हैं- संस्था में स्वच्छता कार्यक्रमय सामुदायिक सेवा कार्यक्रमय सामाजिक सेवा कार्यक्रमय प्राथमिक चिकित्सा कार्यक्रमय राष्ट्रीय दिवस और त्योहारों का उत्सव, मूल्यों को दर्शाने वाले नाटकीय संस्थानों में छात्र की भागीदारी या स्व-शासन, सभी धर्मों की एकता, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता पर जोर देने वाली व्याख्यान और वार्ता, शिक्षकों द्वारा आचरण और व्यवहार के अच्छे उदाहरण स्थापित करना, जो कि छात्रों के द्वारा स्वयं किए जा सकते हैं।

### *3. मूल्य शिक्षा प्रदान करने में शिक्षकों की भूमिका*

साधारण शिक्षक समाज में असाधारण परिवर्तन ला सकते हैं। एक शिक्षक को अभ्यास करना चाहिए कि वह क्या उपदेश देता है। शिक्षक छात्रों के लिए एक आदर्श हैं। शिक्षक प्रारंभिक वर्षों में एक छात्र के व्यक्तित्व पर अधिकतम प्रभाव डालता है (डैस्ट, 2005)। छात्र जाने-अनजाने इन आदर्शों से गुण और दोष ग्रहण करते हैं। शिक्षक अपने कार्यों द्वारा छात्रों के उचित व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं। शिक्षकों का स्वस्थ दृष्टिकोण होना चाहिए और उनके पास समृद्ध मूल्य भी होने चाहिए। शिक्षण गुणवत्तापुर्ण शिक्षा प्रदान करने के उनके काम के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्म दृष्टिकोण के बारे में है। शिक्षक को मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए। एक शिक्षक न केवल जानकारी का एक स्रोत है, बल्कि एक संरक्षक भी है। इसके लिए शिक्षक को अध्यापन के पेशे का सम्मान करना चाहिए, अपने विषयों और छात्रों से प्यार करना चाहिए, छात्र उन शिक्षकों से प्रेरणा लेंगे जिनके पास उच्च आत्म-सम्मान (लोवैट एण्ड टुमी, 2007) है।

यदि समकालीन शिक्षा को आधार बनाया जाए तो यह जीवन के नैतिक मूल्यों को समझने, उसकी सराहना करने और उसे बनाए रखने के लिए शिक्षकों के बिना कभी नहीं किया जा सकता है। यदि कोई इन मूल्यों का अभ्यास नहीं कर सकता है, तो किसी को शिक्षण व्यवसाय का सपना नहीं देखना चाहिए। यह जीवन और भावी पीढ़ी के लिए एक मिशन और दृष्टि है। इस तरह की अनुभूति वर्तमान शिक्षकों में उत्पन्न की जानी चाहिए। सद्गुण के सैद्धांतिक ज्ञान को अच्छे चरित्र के पर्याप्त अभ्यास, कर्मचारियों और छात्रों के बीच समन्वय एवं स्कूल द्वारा प्रदान की जाने वाली गतिविधियों और अवसरों के पूरक होना चाहिए। सह-पाठ्डचर्या संबंधी गतिविधियाँ चरित्र के प्रशिक्षण के अवसरों को समर्थन करती हैं। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को अपने छात्रों को इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उत्कृष्ट शिक्षक-छात्र संबंध बनाने और शांतिपूर्ण विद्यालय वातावरण बनाए रखने के लिए शिक्षकों की प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी बहुत आवश्यक है (यूनेस्को, 2007)। शिक्षक को अपने चरित्र और व्यवहार में छात्र के लिए आदर्श होना चाहिए। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे स्कूल में और स्कूल के बाहर अपने सामान्य व्यवहार के बारे में विद्यार्थियों की सलाह और मार्गदर्शन करें। शिक्षकों को अपने कार्यक्रम की योजना इस तरह से बनानी चाहिए ताकि बच्चों में वांछनीय भावनाओं को विकसित करने में सहायता मिल सके। शिक्षक बच्चे की एक अच्छी आत्म-छवि बनाने में मदद कर सकता है। शिक्षक को समाज का नैतिक प्रहरी माना जाता है। वह अपने छात्रों के लिए और समाज के लिए भी एक आदर्श हैं। शिक्षण मूल्यों का उनका रहस्य चरित्र के अपने स्वयं के उदाहरण और ज्ञान की महारत के माध्यम से छात्रों के बीच खोज को प्रेरित और प्रोत्साहित करना है। इसका अर्थ है अपने आप से मूल्यों को मूर्त रूप देने से हम वास्तव में अपने छात्रों के लिए मूल्यों को बढ़ा सकता हैं। इसलिए एक अच्छे शिक्षक को विभिन्न क्रियाओं में भूमिका निभाने वाले विभिन्न गुणों में से, अस्तित्व के विभिन्न भागों में ध्वनि मनोवैज्ञानिक ज्ञान होना चाहिए।

एक नियोजक नेता, एक आयोजक, एक रिकॉर्डर और मूल्यांकनकर्ता, एक प्रबंधक, एक निर्णयकर्ता, एक सलाहकार, एक प्रेरक, एक संवादकर्ता और एक समन्वयक के रूप में विद्यालय में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के आयोजन में एक शिक्षक की भूमिका निभाता है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षक को उन गतिविधियों के लिए समय-सारणी में समायोजन करना पड़ता है जो विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं और भाग लेते समय पाठ्डक्रम के अभिन्न अंग के रूप में मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। (अनेजा, 2014). तब इन गतिविधियों का अच्छा प्रभाव पड़ेगा और महान शैक्षिक मूल्य भी होंगे। सभी पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन भक्ति भावना के साथ किया जाना चाहिए। इस प्रकार विभिन्न गतिविधियों पर आधारित एक सुसंगत कार्यक्रम की योजना बनाकर उत्तेजनाओं में समृद्ध एवं आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाएगा, व्यवसाय की तैयारी, ईमानदारी की भावना, क्षमता, सर्जनात्मकता, रचनात्मकता का आयोजन करेगा एवं स्कूल और समुदाय के बीच अच्छे सम्बन्ध बनाए रखेगा। इन गतिविधियों के बिना स्कूल एक शिक्षण की दुकान से अधिक नहीं होगा और बच्चे किताबी कीड़ा से ज्यादा कुछ भी नहीं होंगे। काम के प्रति सही नजरिया रखकर उसे एक मिसाल कायम करनी होगी।

## निष्कर्ष

इसलिए बदलते सामाजिक परिदृश्य में एक शिक्षक की भूमिका बहुत चुनौतीपूर्ण होती जा रही है। पहले के समय में शिक्षक सूचना का एकमात्र स्रोत था। ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला कोई भी व्यक्ति हो उसके आगे झुकना पड़ता था। आज हमारे पास कई सूचना केंद्र हैं जैसे किताबें, कोचिंग सेंटर, ऑडियो-विजुअल सामग्री और इंटरनेट सेवाएँ। इस प्रकार सूचना के एकमात्र स्रोत के रूप में शिक्षक की भूमिका किनारे पर है। आज का समाज अधिक भौतिकवादी होता जा रहा है और मूल्यों को पीछे की ओर धकेला जा रहा है। समाज में हर कोई अमीर बनने की आकांक्षा रखता है जितना सम्भव हो सके और जितनी जल्दी हो सके, किसी भी कीमत पर अमीर होना एक आदर्श वाक्य सा रहा है। निरपवाद रुप से तुरन्त अमीर होने की यह प्रक्रिया मूल्यों की कीमत पर होती है। मात्र एक आदर्श शिक्षक ही समाज को सही दिशा में ले जा सकता है, जिसका जीवन स्वयं मूल्यों का एक प्रकाश स्तम्भ है। उसे आशावाद,

प्रेरणा, सीखने और सिखाने की इच्छा, सत्य अहिंसा और दूसरों के बारे में बुरा सोचने, रचनात्मकता और प्रेम को प्रदर्शित करने की क्षमता जैसे आवश्यक मूल्यों का प्रदर्शन करना है। समाज में मानवीय मूल्यों का संवर्धन व्यक्तियों के बीच अच्छे गुणों को बढ़ावा देने पर निर्भर करता है। प्रत्येक देश और परम्परा में एक शिक्षक का स्थान न केवल संस्थान में बल्कि समाज में भी गौरवशाली रहा है। एक जापानी कहावत के अनुसार- 'एक गरीब शिक्षक कहता है, एक औसत शिक्षक सिखाता है, एक अच्छा शिक्षक समझाता है, एक उत्कृष्ट शिक्षक प्रदर्शन करता है और एक महान शिक्षक प्रेरित करता है।' छात्रों को प्रेरित करने के लिए एक शिक्षक को दो भूमिकाओं का निर्वहन करना चाहिए- प्रथम है स्वयं को ढालना और द्वितीय है दूसरों को ढालना। एक परमाणु शक्ति वाला राष्ट्र एक मजबूत राष्ट्र नहीं है बल्कि मजबूत चरित्र वाले राष्ट्र वास्तव में एक मजबूत राष्ट्र है। इसलिए सतत् मानव विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-


1. अनेजा, एन. (2014). द इम्पार्टेन्स आफ वैल्यू एजूकेशन इन द प्रीजेन्ट एजूकेशन सिस्टम एण्ड रोल ऑफ टीचर. इण्टरनेशनल जर्नल आफ सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमैनिटीज रिसर्च, 2(3), 230-233.
2. एस्पिन, डी. और चौपमैन, जे. (2007). वैल्यू एजूकेशन एण्ड लाइफ लांग लर्निंग: प्रीसिंपल, पॉलिसीज, प्रोग्राम्स. स्प्रिंगर.
3. सैण्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकण्डरी एजूकेशन. (2003). वैल्यू एजूकेशन अ हैण्डबुक फॉर टीचर्स. न्यू दिल्ली.
4. डैस्ट. (2003). वैल्यू एजूकेशन स्टडी. मेलबोर्न: करीकुलम कार्पोरेशन.
5. डैस्ट. (2005). नेशनल फ्रेमवर्क फार वैल्यूज एजूकेशन इन आस्ट्रेलियन स्कूल्स. कैनबरा: डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन, साइन्स एण्ड ट्रेनिंग.
6. कालिका, कीर्तिनाथ. (2015). नीड ऑफ वैल्यू एजूकेशन एण्ड अ टीचर्स रोल. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमैनिटीज रिसर्च, 3(4), 566-571.
7. कौर, कुलदीप एवं नागपाल, बलविंदर. (2013). टाचर एजूकेशन एण्ड ऑफ टीचर एजूकेटर्स इन वैल्यू एजूकेशन. एजूकेशनिया कॉनफैब, 2(11).
8. लोवेट एंड स्कोफील्ड. (1998). वैल्यूज फॉर्मेशन इन सिटीजेनशीप एजूकेशन: अ प्रापोजीशन एण्ड एन इम्पीरिकल स्टडी. यूनीकार्न 24, 46-54.
9. लोवेट, टी. एण्ड टुमी, आर. (2007). वैल्यूज एजूकेशन एण्ड क्वॉलिटी टीचर्स: द डबल हैलिक्स इफैक्ट. डेविड बारलो पब्लिशिंग.
10. एनसीआरटी. (2003). वैल्यूज एजूकेशन इन इण्डियन स्कूल्स: एक्सपेरियन्स एण्ड स्ट्रैटिजी ऑफ इमप्लिमेन्टेश. नई दिल्ली।
11. राधा, पी. (2016). रोल आफ टीचर्स इन इम्पारटिंग वैल्यू एजूकेशन. नैशनल कान्फरेन्स आन ''वैल्यू एजूकेशन थ्रू टीचर एजूकेशनश्श1(5).
12. यूनाइटेड नेसंस एजूकेशनल साइन्फिक एण्ड कल्चरल आर्गेनाइजेशन. (2001). लर्निंग द वे आफ पीस- अ टीचर्स गाइड टू पीस एजूकेशन. न्यू दिल्ली.
13. वेगेलर, डब्ल्यू. एण्ड वेडुर, पी. (2003). वैल्यूज एण्ड टीचिंग. टीचर्स एण्ड टीचर्स. 9(4), 377-390.